50

अपनी परेशानियों का दोष परमेश्वर के सिर मढ़ना

(16:9-21)

चीनी लोगों में एक कहावत है कि ''पंछी चाहे कितना भी ऊंचा उड़ जाए उसकी पूंछ उसके पीछे ही रहती है।''[1] अन्य शब्दों में व्यक्ति अपने कर्मों के परिणाम से भाग नहीं सकता। यह तथ्य विशेष रूप से पाप के विषय में बिल्कुल सही है: ''जान रखो कि तुम को तुम्हारा पाप लगेगा'' (गिनती 32:23)। क्रोध के सात कटोरे पाप के भयंकर परिणामों की तस्वीर हैं। पिछले पाठ में हमने पहले चार कटोरों की बात की थी; इस और अगले पाठ में हम अन्तिम तीन कटोरों की समीक्षा करेंगे।

चौथा कटोरा उण्डेले जाने पर हमने देखा था कि अविश्वासियों ने परमेश्वर की ''निन्दा की और उसकी महिमा करने के लिए मन न फिराया'' (आयत 9ख)। इस अध्ययन में पांचवां कटोरा उण्डेले जाने पर भी परिणाम वही होगा, उन्होंने ''अपनी पीड़ाओं और फोड़ों के कारण स्वर्ग के परमेश्वर की निन्दा की; और अपने-अपने कामों से मन न फिराया'' (आयत 11)। अन्तिम कटोरे का उत्तर वैसा ही होगा: ''लोगों ने ...परमेश्वर की निन्दा की'' (आयत 21ख)। प्रकाशितवाक्य में और कहीं केवल पशु द्वारा ही परमेश्वर की निन्दा करने की बात कही गई है (13:1, 5, 6; 17:3)। यह तथ्य कि इन अविश्वासियों ने भी परमेश्वर की निन्दा की, दिखाता है कि उन्होंने अपने स्वामी के मन को कितना पा लिया था।

परमेश्वर की निन्दा करने का अर्थ क्या है? ''निन्दा'' के लिए अंग्रेज़ी शब्द ''blaspheme'' यूनानी भाषा के उस शब्द का लिप्यंतरण है, जिसका मूल अर्थ ''बातों से घायल करना'' है।[2] परमेश्वर की निन्दा करने का अर्थ परमेश्वर के विरुद्ध बोलना, उसके काम और उसके नाम को नष्ट करने का प्रयास करना है। पशु के बारे में कहा गया था कि उसने ''परमेश्वर की निन्दा करने के लिए मुंह खोला, कि उसके नाम और उसके तम्बू अर्थात स्वर्ग के रहने वालों की निन्दा करे'' (13:6)। हमने सुझाव दिया था कि यह कलीसिया के बारे में फैलाई गई अपमानजनक बातें हैं।

पशु के अनुयायियों की निन्दा ऐसी ही थी: आयत 9 कहती है कि उन्होंने परमेश्वर ''के नाम की निन्दा की''; उन्होंने पशु द्वारा किए जाने वाले अपमान का मज़ाक किया

होगा। इसके अलावा उनके द्वारा निन्दा किए जाने का एक विशेष कारण था कि वे अपनी परेशानियों के लिए *परमेश्वर पर आरोप* लगा रहे थे। यदि वे किसी प्रकार भी अपने आधुनिक समकालीनों जैसे थे, तो परमेश्वर की उनकी निन्दा कुछ इस प्रकार होगी: ''परमेश्वर निष्पक्ष नहीं है! हम पर ऐसी परेशानी नहीं आनी चाहिए थी!'' ''मसीही लोग कहते हैं कि परमेश्वर, प्रेम करने वाला परमेश्वर है; परन्तु यदि प्रेम ऐसा होता है तो मैं ऐसे प्रेम को नहीं मानता!'' वे अपने कर्मों का ''ठीक-ठीक बदला'' मिलने के बावजूद परमेश्वर को ज़िम्मेदार ठहराते हैं (इब्रानियों 2:2)।

समय के आरम्भ से ही मनुष्य अपनी परेशानियों का आरोप दूसरों पर लगाने की कोशिश करता रहा है: आदम ने अपने पाप का आरोप हव्वा पर लगाया और हव्वा ने आगे सांप पर आरोप लगाया (उत्पत्ति 3:12, 13)। सोने के बछड़े के साथ पकड़े जाने पर हारून ने लोगों पर आरोप लगाया (निर्गमन 32:22, 23)। जब इस्राएल में वर्षा नहीं हुई तो अहाब राजा ने एलिय्याह नबी पर आरोप लगाया (1 राजा 18:17)। पति-पत्नी को परामर्श देते हुए मैंने बार-बार इस खूबी को पाया है। क्रुद्ध पति ने शीशे की खिड़की में मुक्का मारकर अपने लहूलुहान हाथ और कलाई उठाते हुए अपनी पत्नी से कहा, ''देख *तूने* क्या कर दिया!''

आज लोग अपनी समस्याओं का आरोप अपने माता-पिता, स्कूलों, कलीसियाओं, सरकार, समाज और यहां तक कि परमेश्वर पर लगा देते हैं, परन्तु अपने आप पर कभी कोई आरोप नहीं लगाते।[3] तौ भी बाइबल आज भी सिखाती है कि अपने कर्मों के ज़िम्मेदार हम खुद हैं: ''जो प्राणी पाप करे, वही मरेगा, न तो पुत्र पिता के अधर्म का भार उठाएगा और न पिता पुत्र का; ... दुष्ट को अपनी ही दुष्टता का फल मिलेगा'' (यहेजकेल 18:20)।

अन्तिम तीन कटोरे यिर्मयाह 25:14 में परमेश्वर की वफ़ादारी की बात को चित्रित करते हैं: ''मैं उनको उनकी करनी का फल भुगताऊंगा।'' कटोरे परमेश्वर के न्याय को स्वीकार करने में कइयों की अनिच्छा पर भी ज़ोर देते हैं। उनके गलत उदाहरण से हम सीख सकते हैं; हम अपने कामों की ज़िम्मेदारी स्वीकार करना सीख सकते हैं। एक दिन ''हम में से हर एक परमेश्वर को *अपना-अपना* लेखा देगा'' (रोमियों 14:12)।

पीड़ा के लिए परमेश्वर पर आरोप लगाना (16:10, 11)

माइकल विल्कोक इस बात को मान गया था कि ''प्रकाशितवाक्य के कुछ दर्शन पांचवें कटोरे से अधिक भयभीत करने वाले [हैं]।''[4] इस कटोरे के बारे में बताने वाली आयत का आरम्भ होता है, ''और पांचवें ने अपना कटोरा उस पशु के सिंहासन पर[5] उण्डेल दिया और उसके राज्य पर अन्धेरा छा गया'' (आयत 10क)। (पांचवां कटोरा का चित्र देखें।)

पांचवीं *तुरही* बजने पर, शैतानी टिड्डियां अथाह कुण्ड में से लोगों को सताने के लिए निकल आई थीं। हमने इन्हें दोषी विवेक के क्लेश सहित व्यक्ति पर पाप के प्रभाव के संकेत के रूप में देखा था।[6] हमने ज़ोर दिया था कि पाप का एक परिणाम नैतिक पतन है।[7]

पांचवां *कटोरा* भी पाप के पीड़ादायक प्रभाव को दिखाता है। परन्तु इससे प्रभावित होने वाले निजी लोग उतने नहीं थे, जितना संसार का पूरा प्रबन्ध: क्योंकि कटोरा ''पशु के सिंहासन पर'' और ''उसके राज्य पर'' उण्डेला गया था।

अध्याय 13 में अजगर ने पशु को अपना सिंहासन दिया था (13:2)। इसका अर्थ यह था कि पशु को राज्य मिला था: उसने पहले ''जगत का राज्य'' पर राज किया था (11:15)। हमने प्रस्ताव दिया है कि यूहन्ना के समय में पशु रोमी साम्राज्य का प्रतीक है, जिसका प्रमुख सम्राट डोमिशियन है। इसलिए ''सिंहासन'' और ''राज्य'' शब्द विशेष रूप से प्रासंगिक लगते हैं क्योंकि रोम में अपने सिंहासन से डोमिशियन ने पृथ्वी पर फैले हुए राज्य पर शासन किया।

पांचवें कटोरे का *काम* भी रोमी साम्राज्य के अगले इतिहास के प्रकाश में प्रासंगिक लगता है। अगली-से-अन्तिम विपत्ति के समय मिस्र देश में अन्धकार छा जाने पर (निर्गमन 10:21-29),[8] कामकाज ठप हो गया था (निर्गमन 10:23)।[9] इसी प्रकार पशु के सिंहासन और राज्य पर अन्धकार साम्राज्य के विघटन का प्रतीक होगा।[10]

अन्धकार के सम्बन्ध में सामान्य प्रासंगिकता भी बनाई जा सकती है: यह उस अन्धकार का संकेत है, जो पाप में बने रहने वाले लोगों के हृदय और मनों में घुस जाता है।[11] यीशु ने कहा कि ''मनुष्यों ने अन्धकार को ज्योति से अधिक प्रिय जाना, क्योंकि उन के काम बुरे थे''(यूहन्ना 3:19)। शैतान के राज्य को ''अन्धकार का वश'' कहा गया है (कुलुस्सियों 1:13; प्रेरितों 26:18 भी देखें)। मसीही बन जाने पर परमेश्वर हमें ''अन्धकार में से अपनी अद्‌भुत ज्योति में'' बुलाता है (1 पतरस 2:9)।

अन्तत: पांचवां कटोरा हमें याद दिलाता है कि न्याय के बाद खोए हुओं को ''बाहर अन्धियारे में'' (मत्ती 22:13) यानी परमेश्वर, जो ज्योति है, की उपस्थिति से दूर (2 थिस्सलुनीकियों 1:9; 1 यूहन्ना 1:5) ''अन्धेर कुण्डों में'' अर्थात ''अन्धकार'' में (2 पतरस 2:4, 17) डाल दिया जाएगा, जहां ''रोना और दांतों का पीसना होगा'' (मत्ती 22:13)।

परमेश्वर के न्याय की प्रासंगिकता पर ध्यान दें, जिसमें अधर्मियों से उसके कहने का अर्थ था, ''तुम्हें अन्धकार प्रिय था, इसलिए तुम्हें अन्धकार ही मिलेगा, ऐसा अन्धकार जो तुम्हें पूरी तरह से ढक ले, तुम्हें छिपा ले, तुम्हारे गले तक आ जाए और हमेशा तक रहे!''

पशु के राज्य के लोगों पर अन्धकार का क्या असर हुआ? पहले हम पढ़ते हैं कि ''लोग पीड़ा के मारे अपनी-अपनी जीभ चबाने लगे'' (आयत 10ख)। शायद यह पीड़ा अन्धकार का सीधा परिणाम (सम्भवतया यह जानने की पीड़ा कि उनके अगुवे किसी काम नहीं आए) था। हो सकता है कि अन्धकार से वह पीड़ा बढ़ी ही हो, जो पहले चार कटोरों के कारण आई थी, जिसमें पहले कटोरे से मिलने वाले फोड़े भी थे (आयतें 2, 11)। मुझे आधी रात को हमेशा अधिक दर्द होता है।

''अपनी-अपनी जीभ चबाने लगे''[12] शब्द मुझे उलझा देते हैं। यह अभिव्यक्ति जो नये नियम में और कहीं नहीं मिलती, शायद उस समय इस्तेमाल किया जाने वाला आम वाक्यांश था, जिसका आज इस्तेमाल नहीं होता। मैंने किसी को जीभ चबाते हुए केवल तभी

देखा था, जब मैंने किसी को मिरगी का दौरा पड़ते देखा। दौरा पड़ने पर प्रभावित व्यक्ति के जबड़े में कोई चीज़ घुसाना आवश्यक होता है ताकि उसकी जीभ को कोई हानि न हो या वह कट न जाए। दौरा पड़े व्यक्ति का अपने आप पर काबू नहीं होता, जिस कारण आयत 10 में ''उन्होंने पीड़ा के कारण अपनी-अपनी जीभें चबाईं'' वाक्यांश का संकेत यह हो सकता है कि ये लोग पीड़ा से ''बेहोश'' हो गए थे। जो भी हो, इससे पता चलता है कि वह पीड़ा कितनी कष्टदायक थी!

अन्धकार का सबसे महत्वपूर्ण परिणाम यह था कि पशु के राज्य के लोगों ने ''अपनी पीड़ाओं और फोड़ों के कारण स्वर्ग के परमेश्वर की निन्दा की;[13] और अपने-अपने कामों से मन न फिराया'' (आयत 11)। उन्होंने अन्धकार को चुना था, परन्तु इसका दोष वे परमेश्वर पर ही लगा रहे थे। एक तस्वीर ध्यान में आती है: एक आदमी थैले से अपना सिर ढक लेता है। चलते हुए वह बार-बार ठोकर खाता है। अन्त में चोट खाया हुआ लहूलुहान वह परमेश्वर पर क्रोधित होते हुए मुट्ठी ऊपर को करता है और चिल्लाता है, ''परमेश्वर, तूने मुझे देखने के अयोग्य क्यों बनाया? तू मेरे जीवन में इतना कष्ट क्यों दे रहा है?''

अपने आप को अन्धकार और पीड़ा में पाने पर हमें चाहिए कि उसका दोष परमेश्वर को न दें, बल्कि उसकी ओर भागें, जिसने कहा है, ''ज्योति मैं हूं'' (यूहन्ना 8:12)।

परेशानियों के लिए परमेश्वर को दोष देना (16:12-17)

''और छठवें ने अपना कटोरा बड़ी नदी फरात पर उण्डेल दिया और उसका पानी सूख गया[14] कि पूर्व दिशा के राजाओं के लिए मार्ग तैयार हो जाए'' (आयत 12)। (छठे कटोरे का चित्र देखें।)

छठी *तुरही* बजने पर, फरात में बान्धे गए चार स्वर्गदूत खोल दिए गए और वे एक बहुत बड़ी सेना बन गए थे (9:13-19)।[15] उस तुरही का अध्ययन करते हुए हमने देखा था कि फुरात रोम और उनके पूर्वी शत्रुओं के बीच एक प्राकृतिक बाधा थी।[16] वही सामान्य अवधारणा छठे *कटोरे* में रही: फरात का सूख जाना इस बात का संकेत था कि वह बाधा हटा दी गई थी। इस प्रकार ''पूर्व दिशा के राजाओं''[17] के लिए अपनी विजयी सेनाओं के साथ देश में प्रलय लाने का मार्ग खुल गया था। हमें फिर से याद दिलाया जाता है कि रोम के गिरने के कारणों में से एक बाहरी आक्रमण था।

परन्तु रोमी साम्राज्य के पतन के लिए छठे कटोरे की प्रासंगिकता मिलानी आवश्यक नहीं है। परमेश्वर ने अपनी इच्छा के प्रति समर्पित लोगों के इर्द-गिर्द बाधा बनाने की प्रतिज्ञा की है: वह ''तुम्हें सामर्थ से बाहर परीक्षा में न पड़ने देगा'' (1 कुरिन्थियों 10:13)। अधर्मियों के लिए ऐसी कोई प्रतिज्ञा नहीं है। जब कोई व्यक्ति प्रभु का विरोध करता है तो ये रुकावटें अपने आप नीचे आ जाती हैं, जिसके भयंकर परिणाम निकलते हैं।[18]

पांचवें कटोरे के बाद हमने मनुष्यजाति का उत्तर देखा था। अब छठे कटोरे के बाद हमें शैतान और उसके साथियों का उत्तर मिलता है:

> और मैंने उस अजगर के मुंह से, और उस पशु के मुंह से और उस झूठे भविष्यवक्ता

> के मुंह से[19] तीन अशुद्ध आत्माओं[20] को मेंढकों के रूप में निकलते देखा। ये चिह्न दिखाने वाली दुष्टात्माएं हैं, जो सारे संसार के राजाओं के पास निकलकर इसलिए जाती हैं कि उन्हें सर्वशक्तिमान परमेश्वर के उस बड़े दिन की लड़ाई के लिए इकट्ठा करें। ... और उन्होंने उसको उस जगह इकट्ठा किया, जो इब्रानी में हर-मगिदोन कहलाता है (आयतें 13, 14, 16)।

इन आयतों से शैतान के ''योजना कक्ष से हमले का जवाब देने''[21] की योजना की रूपरेखा मिली। शैतान कभी परमेश्वर के निर्णयों को स्वीकार नहीं करता; ''आग और गन्धक की झील में'' डाले जाने तक वह विद्रोह ही करता रहेगा (20:10)।

इन आयतों में उसका परिचय मिलता है ''जो इब्रानी में हर-मगिदोन कहलाता है'' (आयत 16)। पहले हमने ''666'' के गुप्त अंक पर इससे बने कुछ शुष्क विचारों पर कुछ अधिक समय दिया था। हर असंगत विचार के लिए जो ''666'' से जुड़ा है, अरमगिद्दोन के सम्बन्ध में एक दर्जन विचार मिल जाते हैं।

''अरमगिद्दोन की लड़ाई'' की अवधारणा ''अन्तिम बड़ी लड़ाई'' की तरह अपने आप में लोगों के मन में इतना समा गई है[22] कि हम केवल 12 से 16 आयतों पर ही एक विशेष पाठ देंगे। फिर भी यह दिखाने के लिए कि ये आयतें अध्याय 16 के संदर्भ में कैसे मेल खाती हैं, यहां कुछ टिप्पणियां देना सही रहेगा।

प्रभु के शत्रुओं के अपनी सेनाओं को प्रभु के विरोध में इकट्ठा करने की तस्वीर इस दर्शन में मिलती है। उन्हें इस बात की समझ नहीं आई कि वे जो कुछ भी कर रहे थे, वह परमेश्वर की योजना को पूरा करने के लिए ही था। पहले तो यह स्पष्ट हो जाता है, जब हमें बताया गया है कि उन्होंने अपनी सेना को इकट्ठा किया ''कि उन्हें सर्वशक्तिमान परमेश्वर के उस बड़े दिन की लड़ाई के लिए इकट्ठा करें'' (आयत 14ख)। उन्हें लगा था कि यह *उनकी* लड़ाई है, जबकि यह वास्तव में *परमेश्वर* की लड़ाई थी और इसका नियन्त्रण उसी के हाथ में था। ''परमेश्वर के उस दिन'' उस दिन को कहा गया है, जब वह न्याय करने आएगा (2 पतरस 3:12)।[23]

गैर जगह

दूसरा संकेत कि जो कुछ उन्होंने किया, वह परमेश्वर के नियन्त्रण में था। वह स्थान है जहां सेना इकट्ठी हुई थी: ''और उन्होंने उसको उस जगह इकट्ठा किया, जो इब्रानी में हर-मगिदोन कहलाता है'' (आयत 16)। अधिकतर विद्वान इससे सहमत हैं कि ''हर-मगिदोन'' (KJV में ''अरमगिद्दोन'') का अर्थ ''मगिद्दो पहाड़'' है। जैसा कि ब्रूस मैज़गर ने ध्यान दिलाया, ''परन्तु इसके साथ कठिनाई यह है कि 'मगिद्दो पहाड़' कोई है ही नहीं।''[24] मगिद्दो के बारे में पुराने नियम में काफी कुछ कहा गया है, परन्तु मगिद्दो पहाड़ के बारे में कुछ नहीं। लेखक पलिश्तीन में किसी जगह को ढूंढ़ने की कोशिश करते हैं, जिसे ''मगिद्दो पहाड़'' कहा गया है, परन्तु ऐसी कोई जगह थी ही नहीं।

ग्लोब में ''मगिद्दो पहाड़'' जैसी कोई जगह न मिल पाना क्या पवित्र आत्मा के इस

शब्द के इस्तेमाल के बारे में कोई संकेत देता है ? यूहन्ना एक भौगोलिक स्थिति नहीं, बल्कि एक *अवधारणा* के बारे में लिख रहा था। ''घुमाव'' के विचार को याद रखें:[25] पवित्र आत्मा ने प्रकाशितवाक्य में पुराने नियम की शब्दावली का इस्तेमाल करते हुए इसे बदल दिया (अर्थात इसे ''घुमाव'' दे दिया) जिससे हमें पता चलता है कि प्रकाशितवाक्य पुराने नियम की कही उसी बात को नहीं, बल्कि उससे जुड़ी *अवधारणा* को देता है।

घुमाव वाले मगिद्दो से हमें क्या अवधारणा मिल सकती है ? मगिद्दो प्रसिद्ध जगह थी, जहां महत्वपूर्ण लड़ाइयां लड़ी जाती थीं। यह वह जगह थी *जहां परमेश्वर की इच्छा पूरी करने वाले लोग विजयी होते थे और जो परमेश्वर की इच्छा के विपरीत काम करते थे, वे नाश हो जाते थे।* (वाक्य को दोबारा से देखें; अपने दिमाग में इसे बसने दें।) आयत 16 के साथ इसके महत्व पर विचार करें: ''और उन्होंने उसे उस जगह इकट्ठा किया, जो इब्रानी में हर-मगिदोन कहलाता है।'' मेंढकों ने अपनी सेना वहां इकट्ठी कर ली थी, *जहां से उनके लिए जीतना असम्भव था* अर्थात जहां के लिए वे आरम्भ से ठहराए गए थे!

अ-घटना

गैर स्थान ही पृष्ठभूमि नहीं था; अवसर भी अ-घटना का था। *कोई ''लड़ाई'' नहीं हुई थी।* दुष्ट की सेना इकट्ठी होते ही, ''सातवें स्वर्गदूत ने अपना कटोरा हवा पर उण्डेल दिया और मन्दिर के सिंहासन से यह बड़ा शब्द हुआ, 'हो चुका''' (आयत 17)। कोई गोली नहीं चली थी, कोई मिसाइल का धमाका नहीं हुआ था। परमेश्वर ने कहा, ''हो चुका,'' और खत्म हो गया।

बाइबल ''अरमगिद्दोन की लड़ाई'' के बारे में कुछ नहीं जानती! 13 से 16 आयतें परमेश्वर की योजनाओं और उद्देश्यों में बाधा डालने के शैतान के निरन्तर और जारी रहने वाले प्रयासों के संकेत हैं, उन प्रयासों का जो अन्त में विफल हो जाने थे।

13 से 16 आयतों को छोड़ने से पहले एक और सच्चाई पर ज़ोर देते हैं: मेंढकों के भर्ती अभियान के बीच परमेश्वर ने एक टिप्पणी के साथ रुकावट डाली (रुकावट के बीच रुकावट): ''(देख, मैं चोर की नाईं आता हूं;[26] धन्य वह है,[27] जो जगता रहता है, और अपने वस्त्र की चौकसी करता है,[28] कि नंगा न फिरे, और लोग उसका नंगापन न देखें)'' (आयत 15)।

उदारवादी टीकाकार[29] शिकायत करते हैं कि यह आयत ''गलत जगह में'' है, क्योंकि इससे 13, 14 और 16 आयतों के विचार के प्रवाह में रुकावट पड़ती है। वे आयत 15 को वचन में कहीं और रखने या इसे हटाने से परहेज नहीं करते। परन्तु पवित्र आत्मा ने इस वाक्य को वहीं रखा है, जहां वह इसे रखना चाहता है और यह यहीं ठीक है। इस पर विचार करें कि सब दुष्ट शक्तियों के एक जगह इकट्ठा होने का विचार (आयतें 13, 14) यूहन्ना के पाठकों के लिए खतरे की घण्टी होना था। इस प्रकार यीशु ने उन्हें यह बताकर कि वह उनके विरोधियों का नाश करने आ रहा है, उन्हें फिर से आश्वासन देने के लिए रुका।[30] मेरे ध्यान में एक अवसर आता है, जब मैं अपनी एक बेटी को बता रहा था कि ऑपरेशन करते

समय किस चीज़ की कब अपेक्षा करनी चाहिए। जब वह बेचैन सी लगी तो मैं उसे आश्वस्त करने के लिए कि मैं पूरा समय उसके साथ रहूंगा, मैं रुक गया। फिर मैंने अपनी बात पूरी की।

यीशु ने केवल इतना ही नहीं कहा कि वह समस्या के समाधान के लिए कुछ करेगा। अपने अनुयायियों को उसने यह भी बताया कि उन्हें क्या करना है: (1) उन्हें आत्मिक रूप से जागते रहना आवश्यक था और (2) उन्हें आत्मिक वस्त्र पहने होना आवश्यक था। सात कलीसियाओं के नाम पत्रों में ऐसी ही चुनौतियां दी गई थीं, जिनमें यीशु ने सरदीस की कलीसिया से कहा, ''जागृत रह और उन वस्तुओं को जो बाकी रह गई हैं, और जो मिटने को थीं, उन्हें दृढ़ कर; ... यदि तू जागृत न रहेगा, तो मैं चोर की नाईं आ जाऊंगा और तू कदापि न जान सकेगा, कि मैं किस घड़ी तुझ पर आ पड़ूंगा'' (3:2, 3)।[31] लौदीकिया की कलीसिया को उसने समझाया, ''मैं तुझे सम्मति देता हूं कि ... मुझ से मोल ले, कि धनी हो जाए; और श्वेत वस्त्र ले ले कि पहिनकर तुझे अपने नंगेपन की लज्जा न हो'' (3:18)।[32] प्रभु की दोहरी चुनौती का संदेश स्पष्ट था कि उसके लौट आने के लिए हर समय तैयार रहो![33]

दण्ड के लिए परमेश्वर को दोष देना (16:17-21)

यह घोषणा करने के बाद कि दुष्ट की सेनाओं को एक जगह इकट्ठा होने के लिए विवश किया गया था, जहां वे जीत न पाएं (हर-मगिदोन), अब सातवें स्वर्गदूत ने अपना कटोरा खाली करना था: ''सातवें स्वर्गदूत ने अपना कटोरा हवा पर उण्डेल दिया'' (आयत 17क)। सातवां कटोरा का चित्र देख (16:17-21।)

कई लेखक इस तथ्य में महत्व देखते हैं कि कटोरा ''*हवा* पर'' उण्डेला गया था। कई हवा के महत्व पर ध्यान दिलाते हैं, जिसमें हम सांस लेते हैं: जब पानी लहू बन गया (दूसरा और तीसरा कटोरा), तो यह बुरा था, क्योंकि पानी के बिना मनुष्य केवल कुछ दिन ही जीवित रह सकता है; दूसरी ओर हवा के बिना केवल कुछ *मिनट* ही जीवित रह सकता है। अन्यों का यह मत है कि सातवां कटोरा शैतान पर जो ''आकाश के अधिकार का हाकिम'' (इफिसियों 2:2) कहलाता है, सीधा हमला करने के लिए ''हवा'' में निशाना था। इस शब्द का कोई विशेष महत्व हो न हो, परन्तु कटोरा उसमें जिसे हम वातावरण कहते हैं, खाली किया गया था, जिससे ''हर जगह, सुरक्षा के लिए कोई कोना नहीं बचा, परमेश्वर का क्रोध मनुष्यों पर तैरने लगा।''[34]

यह होने पर, ''मन्दिर के सिंहासन से यह बड़ा शब्द हुआ,[35] कि 'हो चुका''' (आयत 17ख)। आयत 1 की तरह ही, यह आवाज़ परमेश्वर की होगी।[36] ''हो चुका'' एक यूनानी शब्द का अनुवाद पूर्णकाल में करता है: शब्द से पूरे हुए कार्य का संकेत मिलता है।[37] परमेश्वर ने जो करने के लिए ठहराया था, उसे पूरा कर दिया था। प्रकाशितवाक्य में छह अध्याय रहते हैं, परन्तु पुस्तक का अधिकतर शेष भाग मुख्यतया अध्याय 16 की अन्तिम आयतों का विस्तार और व्याख्या ही है।

ईश्वरीय उद्घोषणा के बाद ईश्वरीय सामर्थ का प्रदर्शन हुआ:[38] ''फिर बिजलियां, और शब्द, और गर्जन हुए, और एक ऐसा बड़ा भुईंडोल हुआ, कि जब से मनुष्य की उत्पत्ति पृथ्वी पर हुई, तब से ऐसा बड़ा भुईंडोल कभी न हुआ था''[39] (आयत 18)।

भुईंडोल का विशेष निशाना बाबुल पर था (जो अगले अध्याय में रोम नगर के रूप में पहचाना गया लगता है;[40] देखें 17:9, 18)। बाबुल के गिरने की घोषणा 14:18 में की गई थी; यहां हमें ''और उस बड़े नगर के तीन टुकड़े हो गए'' (आयत 19क) शब्दों से आरम्भ के साथ उस गिरने का संक्षिप्त विवरण मिलता है। ''तीन'' ईश्वरीयता का अंक है।[41] ''तीन टुकड़े हो गए'' ईश्वरीय न्याय का संकेत देता है।[42]

रोम गिरते-गिरते भी दूसरों को प्रभावित कर गया। रोम नगर संसार की सुन्दरी थी; बहुतेरे लोगों का भविष्य उसके भविष्य से जुड़ा हुआ था। इस कारण हम पढ़ते हैं कि बाबुल के नष्ट होने से ''जाति-जाति के नगर [भी] गिर पड़े'' (आयत 19ख)।

परमेश्वर को इतना क्रोध क्यों आया? बाबुल और उसके साथियों ने परमेश्वर को मानने और उसे महिमा देने से इनकार कर दिया। इसलिए, ''बड़े बाबुल का स्मरण परमेश्वर के यहां हुआ,[43] कि वह अपने क्रोध की जलजलाहट की मदिरा उसे पिलाए'' (आयत 19ग)। लियोन मौरिस ने लिखा है:

> *उसके क्रोध की जलजलाहट की मदिरा से भरे कटोरे* के अर्थ जितनी ज़ोरदार अभिव्यक्ति इस पुस्तक में कहीं और नहीं मिलती।[44] यूहन्ना ने हमें किसी संदेह में नहीं रहने दिया कि बाबुल को सर्वशक्तिान और परमपवित्र परमेश्वर की ओर से जितने भी विरोध की कल्पना की जा सकती है, मिलेगा।[45]

आयत 20 में हमें परमेश्वर की सामर्थ की एक और अभिव्यक्ति मिलती है: ''और हर एक टापू अपनी जगह से टल गया; और पहाड़ों का पता न लगा'' (देंखे 6:14)।

आयत 21 में आयत 18 और 20 से मिलता-जुलता संकेत मिलता है, परन्तु इसमें उस रूपक का इस्तेमाल किया गया है, जो प्रकाशितवाक्य में पहले नहीं है, अर्थात मिस्र में सातवीं विपत्ति के स्मरण का रूपक (निर्गमन 9:18-35): ''और आकाश से मनुष्यों पर मन-मन भर के[46] बड़े ओले गिरे'' (आयत 21क)। मैंने गोल्फ की गेंद के आकार का ओला और बेसबॉल के आकार का ओला देखा है; मैंने अंगूर के आकार के ओले के बारे में सुना है; परन्तु संसार में मन-मन के ओले कभी नहीं पड़े। (हम में से कइयों को याद है कि मन-मन की बर्फ की सिल्लियां बिकती देखी होंगी। मैं नहीं चाहूंगा कि बर्फ के उन ढेलों में से कोई मेरे सिर पर गिरे!)

''[पुराने नियम] में परमेश्वर ने अपने लोगों के शत्रुओं को कई बार ओलों से दण्ड दिया। ... ओलों को ईश्वरीय प्रतिशोध का गढ़ माना जाता था।''[47] इस बात को समझें कि आयत 21 भविष्य में आकाश से मन-मन के ओलों के गिरने की भविष्यवाणी नहीं कर रही है, बल्कि यह इस बात को दिखाती है कि पाप से परमेश्वर कितना नाराज़ होता है!

फिर, हमें प्रभावित लोगों का यह अजीब उत्तर मिलता है: ''इसलिए कि यह विपत्ति

बहुत ही भारी थी, लोगों ने ओलों की विपत्ति के कारण परमेश्वर की निन्दा की'' (आयत 21ख)। अपने सिरों पर परेशानी वे स्वयं लेकर आए थे (भजन संहिता 7:16), परन्तु उसका दोष वे अभी भी परमेश्वर को दे रहे थे!

सारांश

यदि हमें अध्याय 16 से कुछ भी सीखने को मिलता है तो हमें यह सीखना चाहिए कि अपनी समस्याओं के लिए परमेश्वर को दोष न दें। हमारी कुछ समस्याएं पापपूर्ण संसार में रहने के कारण होती हैं (उत्पत्ति 3:17-19)। कुछ समस्याएं पापी लोगों के साथ हमारी संगति के कारण होती हैं (रोमियों 14:7)। कुछ हमारे अपने गलत निर्णयों का परिणाम हो सकती हैं (गलातियों 6:7)। हमारे जीवन में समस्याएं चाहे किसी भी कारण क्यों न आती हों, हमें मूर्खतापूर्वक उनका दोष परमेश्वर पर नहीं लगाना चाहिए (देखें अय्यूब 1:22; KJV)। ''दबाव में आया कोई भी व्यक्ति यह न कहे, 'परमेश्वर मुझे लंगड़ी मारकर गिरा देना चाहता है।' परमेश्वर ... किसी के रास्ते में रुकावट नहीं डालता।''[48] बल्कि अपनी कठिनाइयों में से निकलने के लिए हमें परमेश्वर पर भरोसा रखना चाहिए और उनसे सीखना चाहिए।

सबसे बढ़कर हमें उन लोगों के जैसा नहीं बनना चाहिए, जिन्होंने मन फिराने से इनकार कर दिया। अपने मनों को कोमल रखते हुए अपने जीवनों की जांच करते रहें (2 कुरिन्थियों 13:5)। जब हम वहां पाप को देखें तो मन फिराकर परमेश्वर के पास लौट आएं (2:5, 16, 22; 3:3, 19; 9:20, 21 भी देखें)। ऐसे ही हम चौकस रह सकते हैं। ऐसे ही हम प्रभु के आने के लिए तैयार रह सकते हैं (16:15)।

यदि आप जोश से यह नहीं कह सकते कि ''हे प्रभु यीशु, आ'' (22:20ख), तो जो भी करना आवश्यक हो उसे करें,[49] पर अपने मन के कठोर हो जाने से पहले कर लें। डॉ.जॉर्ज स्वीटिंग ने लिखा है:

> कई साल पहले हमारा परिवार नियागरा फाल देखने के लिए गया। बसन्त ऋतु थी और बर्फ नदी में गिर रही थी। झरने में गिरते हुए बर्फ के बड़े-बड़े ढेलों के साथ मैंने देखा कि बर्फ में जमी हुई मरी मछलियां भी थीं। कई पक्षी मछलियों को खाने के लिए नदी में नीचे आ रहे थे। झरने के किनारे पर आकर उनके पंख बाहर फैल जाते जिससे वे झरने से बच जाते।
>
> मैंने एक पक्षी को देखा जो लग रहा था कि उसे देर हो गई। ... वह मरी हुई मछली को खाने में व्यस्त हो गया और अन्त में झरने के किनारे पर आने तक उसके शक्तिशाली पंख भारी हो गए। वह पक्षी फड़फड़ाता रहा, फड़फड़ाता रहा और यहां तक कि उसने बर्फ के टुकड़े को पानी से ऊपर भी उठा लिया ... परन्तु उसे इतनी देर हो गई थी कि उसके पंजे बर्फ में जम गए। बर्फ का भार बहुत अधिक था और पक्षी उस कुण्ड में डूब गया।[50]

परमेश्वर की आज्ञा मानने की प्रतीक्षा इतनी न करें कि बहुत देर हो जाए!

सिखाने वालों तथा प्रचारकों के लिए नोट

इस पाठ के वैकल्पिक शीर्षक हैं: ''जब परमेश्वर अप्रसन्नता प्रकट करता है,'' ''परमेश्वर ठट्ठों में नहीं उड़ाया जाता,'' ''परमेश्वर की स्मरण शक्ति,'' ''आकाश से आतंक।''

टिप्पणियां

[1]डब्ल्यू. बी. वेस्ट जूनि., *रैवलेशन थ्रू फर्स्ट सैंचुरी ग्लासिस,* संपा. बॉब प्रिचर्ड (नैशविल्ले: गॉस्पल एडवोकेट कं., 1997), 108. [2]संज्ञा रूप यूनानी मिश्रित शब्द है, जो ''भाषण'' के लिए शब्द के साथ ''घायल'' को मिलाता है। [3]मैं इस बात को समझता हूं कि हम सब अपने जीवन में अलग-अलग बातों से प्रभावित होते हैं और आवश्यक नहीं कि हम अपने ऊपर आने वाली हर आफत के लिए जिम्मेदार हों। परन्तु यह बात अवश्य है कि हम इस बात के लिए ज़िम्मेदार *हैं* कि हमारे रास्ते में आने वाली समस्या पर हम क्या *प्रतिक्रिया* देते हैं और हम इस बात के लिए भी ज़िम्मेदार *हैं* कि वह समस्या हमारे गले पड़ने वाला चक्की का पाट बनता है या उससे बेहतर के लिए आधार बनता है। लोगों के ''हाय मुझ पर!'' पुकारने का दृश्य कम से कम यह कहने के लिए अशिक्षाप्रद है। परमेश्वर में विश्वास रखने वाले को पता होता है कि उसके लिए ''सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न'' करेंगी (रोमियों 8:28)। जीवन में आने वाली चुनौतियों के बावजूद विश्वासी मसीही कह सकता है, ''जो मुझे सामर्थ देता है, मैं उसमें सब कुछ कर सकता हूं'' (फिलिप्पियों 4:13)। [4]*माइकल विल्कोक, आई सॉ हैवन ओपन्ड: द मैसेज ऑफ रैवलेशन,* द बाइबल स्पीक्स टुडे सीरीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटरवर्सिटी प्रैस,1975), 147. [5]KJV में ''seat'' है, परन्तु यहां यूनानी शब्द *thronos* शब्द का रूप है। [6]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 2'' में ''पाप का स्व-विनाशकारी स्वभाव'' पाठ देखें। [7]तुरहियों और कटोरों के बीच नज़दीकी सम्बन्ध होने के कारण, कहा जा सकता है कि रोमी साम्राज्य के भीतर *नैतिक पतन* देश पर छाए हुए आत्मिक और नैतिक अंधकार का मुख्य कारक था, जो अंतत: साम्राज्य के विनाश का कारण बना। रोम के पतन के तीन कारकों को ध्यान में रखें: प्राकृतिक आपदा, आंतरिक गिरावट और बाहरी आक्रमण। [8]मिस्र में छाए अंधकार ने इस्राएलियों को प्रभावित नहीं किया (निर्गमन 10:23)। वैसे ही प्रकाशितवाक्य 16 वाली सात विपत्तियों से मसीही लोगों को छूट थी (देखें आयत 2)। [9]आप चाहें तो उदाहरण देकर बता सकते हैं कि घोर अंधकार में कैसा लगता है और कैसे कोई रास्ता भटक सकता है। मैं उदाहरण के लिए कार्ल्सबार्ड केवर्न्स में अपने दो बार जाने की बात बताऊंगा। [10]रोमी साम्राज्य के लिए पूर्ण अंधकार कितना विनाशकारी होगा इसे समझने के लिए कल्पना करें कि पूरे देश की *बिजली यदि चली जाए* तो क्या होगा।

[11]देखें यूहन्ना 8:12; 12:46; रोमियों 2:19; 13:12; 1 कुरिन्थियों 4:5; 2 कुरिन्थियों 6:14; इफिसियों 5:8, 11; 6:12; 1 थिस्सलुनीकियों 5:5; 1 यूहन्ना 1:6; 2:11. [12]यूनानी शब्द का अनुवाद ''चबाना'' उस मूल शब्द से निकला है, जिसका अर्थ ''चबाना, काटना, खाना'' है। [13]उनकी अलग-अलग ''पीड़ाओं'' में से केवल एक को ही बताया गया है: ''फोड़े'' पहला कटोरा उण्डेले जाने पर मिले थे। उन्हें दूसरे, तीसरे, चौथे कटोरे से ही पीड़ा मिली होगी। ध्यान दें कि पशु और झूठा भविष्यवक्ता अपने पूरे सामर्थ से भी (जिसमें उनकी कथित चमत्कारी शक्ति भी थी), फोड़ों को ठीक नहीं कर पाए। [14]''पुराने नियम में परमेश्वर के एक सामर्थपूर्ण काम को लाल समुद्र [निर्गमन 14:21], यरदन [यहोशू 3:16, 17], और कई बार भविष्यवाणी में [यशायाह

11:15; यिर्मयाह 51:36; जकर्याह 10:11] की तरह पानी के सूखने से जोड़ा जाता है।'' (लियोन मौरिस, *रैवलेशन,* संशो. संस्क., द टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैंट्रीज़ [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी.ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1987], 191.) कई लेखक यह भी ध्यान दिलाते हैं कि कुस्त्रु के बाबुल नगर पर कब्जा कर लेने के समय, फरात नदी के जल का रुख मोड़ दिया गया था ताकि नगर में जाने वाला नदी का भाग ''सूख जाए।'' इस प्रकार नगर को भेद्य बना दिया गया था। 16:12 इस घटना की बात करती है या नहीं। परन्तु यह फरात के सूख जाने के प्रभाव का नाटकीय चित्रण अवश्य देती है। [15]*ट्रथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 2'' में ''नरक का पूर्व स्वाद'' पाठ पर विचार करें। [16]हमने यह भी ध्यान दिया था कि फरात *यहूदियों* और उनके शत्रुओं के बीच में एक प्राकृतिक बाधा थी। [17]''पूर्व दिशा के राजाओं'' वाक्यांश प्रकाशितवाक्य में और कहीं नहीं मिलता और पवित्र आत्मा ने यहां पर इस वाक्यांश की व्याख्या नहीं की। संदर्भ में यह शब्द ''फरात के पूर्व में रहने वाले शत्रुओं'' की बात लगती है। प्रकाशितवाक्य पुस्तक के लिखे जाने के समय, फरात रोमी साम्राज्य की पूर्वी सीमा चिह्नित की गई थी, वे अपना शासन इससे आगे नहीं ले जा सकते थे। [18]छठी तुरही का अध्ययन करते हुए हमने दूसरों पर पाप के प्रभाव पर विशेष जोर दिया था। ऐसी ही प्रासंगिकता यहां बनाई जा सकती है कि जब बाधा नीचे आती है तो पापी ही प्रभावित नहीं होता, बल्कि उसके आसपास का हर व्यक्ति प्रभावित होता है। [19]वचन में यहां पहली बार ''झूठा भविष्यवक्ता'' बात मिलती है: परन्तु 13:11-17 का अध्ययन करते हुए हमने ध्यान दिया था कि दूसरे पशु को पुस्तक के शेष भाग में ''झूठा भविष्यवक्ता'' कहा गया था। विशेषकर 19:20 देखें। [20]कई टीकाकारों का मानना है कि तीन अशुद्ध लोगों के ''मुहों'' से तीन अशुद्ध ''आत्माओं'' के संबंध में शब्दों का खेल है: ''आत्मा'' के लिए यूनानी शब्द का अर्थ ''सांस'' भी हो सकता है। यह सही है कि शैतान का भर्ती का मुख्य तरीका झूठ बोलकर है।

[21]जेम्स डी. स्ट्रैस, *द सीयर, द सेक्वियर एंड द सेवड,* बाइबल स्टडी टैक्स्टबुक सीरीज़ (जोप्लिन, मिज़ोरी: कॉलेज प्रैस, 1963), 225. [22]*ट्रथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' में ''गरजती टापें'' पाठ में अरमगिद्दोन में नोट्स देखें। [23]इस संदर्भ में, ''परमेश्वर का बड़ा दिन'' हो सकता है न्याय के अंतिम दिन को न कहा गया हो और प्रभु का ''आना'' उसके द्वितीय आगमन को नहीं बल्कि रोम पर न्याय को कहा गया। परन्तु जैसा कि पहले कहा गया है कि अस्थाई ''आगमन'' युग के अंत में प्रभु के आने के समय हमारे मनों को तैयार करने के लिए है। [24]ब्रूस एम.मैज़गर, *ब्रेकिंग द कोड: अंडरस्टैंडिंग द बुक ऑफ़ रैवलेशन* (नैशविल्ले: अबिंग्डन प्रैस, 1993), 84. [25]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' में पृष्ठ 56 पर ''घुमाव'' पर नोट्स देखें। [26]'चोर की नाईं' शब्द यह संकेत देता है कि परमेश्वर का आना अचानक होगा। [27]प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में यह तीसरा धन्य वचन है। *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' में पृष्ठ 81 पर 1:3 पर नोट्स देखें। [28]''जागता रहता है और चौकसी करता है'' मूल यूनानी में वर्तमानकाल में है, जो निरंतर क्रिया का संकेत है। यदि हम प्रभु के लौटने के लिए तैयार होना चाहते हैं, तो हमारे लिए *निरंतर* चौकस रहना आवश्यक है। [29]धर्मशास्त्रीय रूप से मैं उदारवादी टीकाकार उन्हें कहता हूं जो बाइबल के मौखिक प्रेरणा से होने में विश्वास नहीं रखते हैं। [30]यीशु की विजय उसके आगमन के कथन में निहित है (आयत 15)।

[31]ट्रुथ फ़ॉर टुडे की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' के पृष्ठ 11 और 12 पर 3:2, 3 पर नोट्स देखें। [32]ट्रुथ फ़ॉर टुडे की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' के पृष्ठ 46 और 47 पर 3:18 पर नोट्स देखें। कई टीकाकार इस तथ्य का उल्लेख करते हैं कि युद्ध में सिपाहियों के पकड़े जाने पर उनके वस्त्रों की किनारी आमतौर पर उतारकर उन्हें लोगों के सामने ज़लील करने के लिए घुमाया जाता था। कई लेखक यह भी उल्लेख करते हैं कि लेवीय दरबान सोता पाए जाने पर उसके वस्त्र को मंदिर का सरदार जला देता था। अगली सुबह उसका जला हुआ (और कटा हुआ) वस्त्र सब में इस बात की घोषणा करता था कि उसने ड्यूटी में कोताही बरती है। संभवत: यह उदाहरण इन दोनों से अधिक सामान्य है: तस्वीर शायद किसी ऐसे व्यक्ति की है जो अपने कपड़े उतारकर बिस्तर में चला गया हो। अचानक उठने पर (आग या किसी और कारण), उसे भागने से पहले कपड़े पहनने का समय नहीं मिला। [33]मैंने आयत 15 की व्याख्या बड़ी तेजी से की है क्योंकि जो मुख्य बात मैं कह रहा हूं उसमें ऐसा हो ही जाता है। आप इस आयत पर अधिक समय लगा सकते हैं क्योंकि यह इतनी व्यावहारिक है। तैयार रहने पर बाइबल की ओर शिक्षा के लिए, दस कुवांरियों का दृष्टांत देखें (मत्ती

25:1-13)। [34]एच. एल. एलिसन, *1 पीटर-रैवलेशन,* स्क्रिप्चर यूनियन बाइबल स्टडी बुक्स सीरीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1969), 76. [35]''मंदिर के सिंहासन से'' वाक्यांश से हमें पता चलता है कि स्वर्ग वाले ''मंदिर'' में भी परमेश्वर का ''दरबार'' वैसा ही है। पशु के सिंहासन को निरस्त कर दिया गया था (16:10), परन्तु परमेश्वर का सिंहासन अभी भी शक्तिशाली ढंग से काम कर रहा था यानी शक्तिशाली था। [36]आयत 1 पर टिप्पणियां फिर से पढ़ें। [37]''पूर्ण काल'' से संकेत मिलता है कि क्रिया का कार्य *पूर्ण हो चुका* या पूरा हो गया था। [38]देखें 4:5; 8:5; 11:19. 6:12 भी देखें। [39]यदि इस अभिव्यक्ति का आपके सुनने वालों के लिए अर्थ है तो आप इसे ''सब भूकंपों की माता'' कह सकते हैं। होमेर हेली ने टिप्पणी की, ''रोमी साम्राज्य से बड़ा कोई क्षेत्र नहीं था इसलिए इसके गिरने पर होने वाले भूकंप से बड़ा भूकंप नहीं होगा'' (*रैवलेशन: एन इंट्रोडक्शन एंड कमैंट्री* [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1979], 338)। [40]कई लोग बाबुल का यरूशलेम मानकर यह सोचते हैं कि दिखाया गया विनाश 70 ई. में इसी नगर के विनाश की तस्वीर है। हमने पहले यह विश्वास करने के कि प्रकाशितवाक्य शताब्दी के अंतिम भाग (और यरूशलेम के गिरने के बाद) लिखी गई और बाबुल रोम का सांकेतिक नगर है, अपने कारण दिए हैं। दोनों में से जो भी हो इन आयतों से यही शिक्षा मिलती है कि चाहे कोई भी नगर या जाति या व्यक्ति हो, वह पाप के परिणामों से बच नहीं सकता ।

[41]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' में पृष्ठ 46 पर ''तीन'' अंक के सांकेतिक महत्व पर टिप्पणियां देखें। [42]इस वाक्यांश का संकेत *पूर्ण* विनाश भी हो सकता है। [43]इस भाग में ''जब परमेश्वर स्मरण करता है'' पाठ का परिचय देता है। [44]NIV का अनुवाद देखें। [45]मौरिस, 195. [46]मूल धर्मशास्त्र में ''तोड़े के आकार का'' (देखें KJV)। तोड़े का वजन अलग-अलग होता है, जिस कारण हम पक्का नहीं बता सकते कि दर्शन वाले ओलों का भार कितना था। अनुमान 60 पौंड से 125 पौंड तक लगाए जाते हैं। ''मन-मन'' जो चालीस किलो के लगभग होता है, बात समझ आती है। [47]राबर्ट माउंस, *द बुक ऑफ़ रैवलेशन,* द न्यू इंटरनैशनल कमैंट्री ऑन द न्यू टैस्टामेंट सीरीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी.ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1977), 304-5. [48]याकूब 1:13; यूजीन एच. पीटरसन, *द मैसेज: न्यू टैस्टामेंट विद साम्ज़ एंड प्रोवर्ब्स* (कोलोराडो स्प्रिंग्स, कोलोराडो: नवप्रैस पब्लिशिंग ग्रुप, 1995), 566. [49]यदि इस पाठ का इस्तेमाल प्रवचन के रूप में किया जाता है तो अपने सुनने वालों को बताएं कि प्रभु की बात कैसे माननी है। इस पुस्तक में ''ध्यान लगाए रखना'' पाठ में टिप्पणी 53 देखें। [50] क्रेग ब्रायन लार्सन, संस्क., *इलस्ट्रेशंस फ़ॉर प्रीचिंग एंड टीचिंग फ्रॉम* लीडरशिप जरनल (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक्स, 1993), 180 में उद्धृत।

विचार एवं चर्चा के लिए प्रश्न

1. ''निन्दा'' शब्द का क्या अर्थ है? लोग परमेश्वर और उसके काम की ''निन्दा'' किस प्रकार करते हैं?
2. क्या लोग कई बार उन समस्याओं के लिए जो उन्होंने अपने ऊपर स्वयं लाई हैं, दूसरों को दोष देते हैं? क्या कुछ लोग परमेश्वर को भी दोष देने की कोशिश करते हैं?
3. पांचवां कटोरा उण्डेले जाने पर क्या हुआ था?
4. पाप आज लोगों के हृदयों और मनों में कैसा ''अन्धकार'' लाता है?
5. छठा कटोरा उण्डेले जाने पर क्या हुआ?
6. तीन मेंढकों के सेना के साथ इकट्ठा होने के बारे में वचन में क्या संकेत दिए गए हैं कि वे परमेश्वर के विरुद्ध जीत नहीं सके?
7. आयत 15 कहती है कि मसीह के आने के लिए तैयार रहने के लिए हमें जागते रहना और अपने वस्त्रों को ''रखना'' आवश्यक है। आपको इसका अर्थ क्या लगता है?

8. सातवां कटोरा उण्डेले जाने पर क्या हुआ ?
9. 18 से 21 आयतों में प्रकाशितवाक्य में पहले मिली ईश्वरीय सामर्थ के प्रदर्शन क्या हैं ? नया प्रदर्शन क्या है ?
10. भुईंडोल से किस पर निशाना लगाया गया था ? पाठ से क्या सुझाव मिलता है कि यह किस नगर पर था ?
11. रोम के पतन में किन तीन कारकों का योगदान था ? क्रोध के सात कटोरों से यह कैसे समझ आता है ?
12. क्या हमें अपने जीवनों की समस्याओं का दोष परमेश्वर पर लगाना चाहिए या उसकी ओर मुड़ना चाहिए ?

पांचवां कटोरा (16:10)

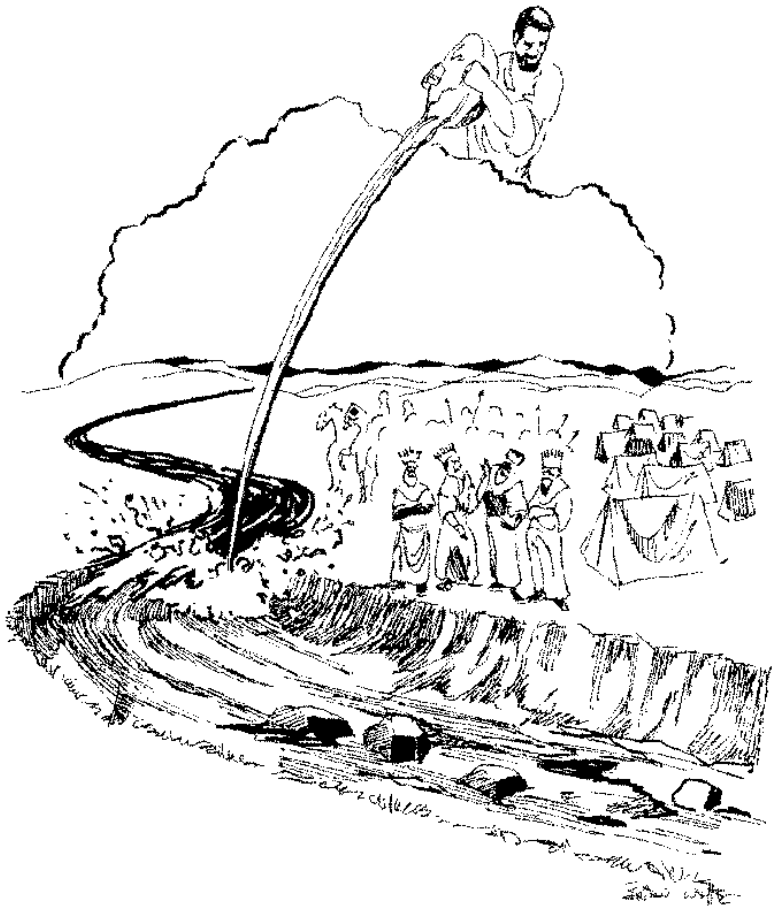

छठा कटोरा (16:12)

सातवां कटोरा (16:17-21)